वैयक्तिक विभिन्नताओं के कारण (Causes of Individual Differences)

जो कुछ भी विभिन्नतायें व्यक्तियों में दिखायी देती हैं, वे सब वंशानुक्रम और वातावरण में पाये जाने वाले अन्तर के कारण ही पैदा होती है। निम्न वर्णन द्वारा इस बात की पुष्टि हो सकती है–

1. यह स्पष्ट है कि व्यक्तियों की वंशानुगत पूंजी अलग-अलग होती है। फलस्वरूप, उन्ही जन्मजात विशेषताओं और रुचियों में अन्तर पाया जाना स्वाभाविक ही है। इन जन्मजात योग्यताओं और विशेषताओं के ऊपर ही

व्यक्तित्व के विशाल भवन का निर्माण होता है। कोई व्यक्ति कितना और किस प्रकार विकसित होगा, इसका निर्धारण भी इन्हीं के द्वारा होता है। इस तरह माँ-बाप द्वारा विरासत में प्राप्त व्यक्तिगत अन्तर एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से भिन्न बनाने का प्रयत्न करते हैं वंशानुक्रम के कारण न केवल रंग, रूप, आकृति और शरीर के आन्तरिक व बाह्य अवयवों से सम्बन्धित विभिन्नतायें देखने को मिलती हैं, बल्कि लिंग, बुद्धि और अन्य विशिष्ट योग्यताओं के क्षेत्र में वैयक्तिक भेद पैदा करने का श्रेय भी इसी को है।

2. दूसरी ओर बच्चे के गर्भ में आने के बाद से ही अगर हम उनको मिलने वाले वातावरण के बारे में सोचें तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि दुनिया में किन्हीं दो व्यक्तियों को एक-सा वातावरण नहीं मिलता। फलस्वरूप, अपनी जन्मजात शक्तियों और योग्यताओं के विकास के लिये सभी को समान अवसर और परिस्थितियाँ उपलब्ध नहीं होती हैं। गर्भावस्था में मिलने वाले पोषण, जन्म के समय की जाने वाली देखभाल, बचपन में मिलने वाला उचित लाड़-प्यार एवं पोषण, विद्यालय अथवा घर में सीखने के लिये मिली सुविधायें, जाति, धर्म और राष्ट्रीयता, माँ-बाप की शिक्षा और बच्चों के प्रति उनका दृष्टिकोण, परिवार की सामाजिक व आर्थिक स्थिति, साथियों का संग और ऐसी बहुत-सी भौतिक, संवेगात्मक, मानसिक और सामाजिक वातावरण से सम्बन्धित बातों में बहुत विभिन्नता देखने को मिलती है। ऐसी विभिन्न परिस्थितियों में पलने वाले बच्चों में वैयक्तिक विभिन्नतायें उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही है।

इस प्रकार से वंशानुक्रम और वातावरण दोनों ही वैयक्तिक भेद उत्पन्न करने के लिये उत्तरदायी कहे जा सकते हैं। इनमें से कौन अधिक उत्तरदायी हैं, यह कहना कठिन है। दूसरे शब्दों में राम और श्याम अथवा गीता व सीता में जो अन्तर दिखाई पड़ता है वह वंशानुक्रम के कारण है या वातावरण के कारण, यह नहीं कहा जा सकता। अगर ये समरूप यमज (Identical Twins) नहीं हैं तो निश्चित रूप से वे वंशानुक्रम विशेषताओं में अलग-अलग होंगे और इस तरह उनमें पायी जाने वाली विभिन्नता के लिए कुछ अंशों में वंशानुक्रम उत्तरदायी होगा। उन्हें अलग-अलग प्रकार का वातावरण आगे बढ़ने के लिये मिलेगा चाहे वे एक ही घर व एक ही विद्यालय में पल रहे हैं व शिक्षा प्राप्त कर रहे हों और इस प्रकार से उनमें पायी जाने वाली विभिन्नतायें वातावरण सम्बन्धी अन्तर के कारण भी पैदा होंगी। दूसरे शब्दों, में सभी प्रकार के वैयक्तिक भेदों के लिये वातावरण व वंशानुक्रम दोनों ही सम्मिलित रूप से उत्तरदायी होंगे। अतः व्यक्तियों में उनकी भिन्नता के कारणों की खोज करने के लिये हमें वंशानुक्रम और वातावरण सम्बन्धी दोनों प्रकार के प्रभावों पर पूरी तरह दृष्टि डालनी चाहिये।